गुरुस्तुतिरूप त्रण लघुकृतिओ

संपा. भँवरलाल नाहटा
कलकत्ता

नोंध : (जेसलमेरस्थित भंडारनी १४मा शतकनी ताडपत्र-पोथीमां संगृहीत केटलीक लघुकृतिओनी नकल, जैन मनीषी पं. श्रीभंवरलाल नाहटा (कलकत्ता) पासे छे. आ कृतिओ अप्रकट छे, अने मुख्यत्वे खरतरगच्छना आचार्यो साथे संबंध धरावे छे. श्रीनाहटाए लखी मोकलेली त्रण विशिष्ट लघुकृतिओ अत्रे प्रस्तुत छे.)

श्रीमोदमन्दिरगणि विरचित
श्रीजिनप्रबोधसूरि-श्रीजिनचंद्रसूरि चन्द्रायणा ॥

वंदहु निम्मलनाणनिहि, जिणपबोहसुमुणीसु ।
लद्धिहिं गोयम अवयरिउ, सूरिजिणेसरसीसु ॥१॥ तरेचच्चचच्चा ॥
सीसि जिणिसरसूरिस्स गुणसायरो, लद्धि किरि अवयरिउ गोयमगणहरो ।
सयलपुहविंदविंदेण वंदियपओ, नाणनिहि नाणनिहि नाणनिहि वंदहो ॥१॥
सोहइ सायरु चंदु समु, नाणपबोहमुणियउ ।
भवियकुमुयपडिबोहकरु, तिहुयणि जो विक्खाउ ॥२॥ तरेचच्चचच्चा ॥
जोय विक्खाउ गुरु सच्चजणवल्लहो, मंदपुन्नाण जंतूण वे दुल्लहो ।
कित्तिजुन्हाइ जो सयलजगु बोहण, चंदसमु चंदसमु चंदसमु सोहण ॥२॥
मेरुसेहरु पुहवि जयउ, जाम मेरुगिरि भारु ।
भवियह भवसंतावहरु, चरणलच्छिउरिहारु ॥३॥ तरेचच्चा तरेचच्चा ॥
हारुउरिचरणलच्छीहि जो छज्जए, पंचबाणस्स बाणेहि तो भिज्जए ।
सूरिजिणचंद भव्वाण भवतमहरो, जयउ गुरु जयउ गुरु जयउ गुरु सेहरो ॥३॥
कामलदेवि सधन्नधर, देवराज अनुमंति ।
जाण पुत्तु जिणचंदगुरु, जाउरुघसमकंतु ॥४॥ तरेचच्चचच्चा तरेचच्चा ॥
कंति पसारउ विहसियकंचणपहो, सुद्धसिद्धांतवक्खाणहयकुप्पहो ॥
उयरि उप्पन्नु जसु सुगुरु साइक्कला, धन्न सा धन्न सा धन्न सा कोमला ॥४॥
सायरु खारउ रवि तवइ, चंद कलंकिउ देहु ।
केणि उपमिज्जइ इह सुगुरु, निरुवमगुणगणगेहु ॥५॥ तरेचच्चा तरेचच्चा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेहु निरुवम सह गुणगणह इह सुहगुरु, केण उवमिज्जए भविय कप्पतरु ।
चंद सकलंकुधर तवइ दिवसेसरो, खारुजलु खारुजलु खारुजलु सायरो ॥५॥

॥ इति श्री जिनप्रबोधसूरि-श्रीजिनचंद्रसूरि-चन्द्रायणाकाव्यं समाप्तम् ॥
कृतिरियं मोदमन्दिरगणीनाम् ॥

★ ★

श्री सज्जनश्रावक कृत
श्रीजिनेश्वरसूरि कुण्डलिया

चउविह धम्मु चलणु जसु धीरह, पंचसमिति तिहुगुपित सरीरह ।
पंचाणणुवय पंच धरंतउ, जिणिसरसूरि तवतेयं फुरंतउ ॥१॥

तवतेय फुरंतउ गयणिं जंपिउ, कामकरिहि जु डारणो,
कुंभयल संगम बलतलप्पवि, कोहमयविडारणो ।
सुइ सीहु देसण रविण गज्जइ, भवियबोहसुप्पहे,
जयवंतु जिणिसरसूरि गणहरु, धम्ममग्गि चउविहे ॥१॥

भंजिउ मोहखंभ जिणि लीलिण, सकल निविड साय तोडिय मण ।
निज्जिउ कोहु दोसु अड चंडउ, जिणेसरसूरि करि धरि विहि दंडउ ॥२॥

करि धरिवि दंड पयंडु चंडिम, मोह वणु जिणि भग्गओ
हरिगच्छविंझगइंद-मुणिंदगणमाहि माणिकदंडओ ।
विहि धम्म सम्म सहाव सीलिण गुडगहि विरउ गंजए
झर्णर्णर्ण झेंझेंकार जिणेसरसूरि कुग्रह भंजए ॥२॥

सील सरोवर पुडइणि मंडिउ, रायहंसि खणु इक्कु न च्छंडिउ ।
जिणेसरसूरि कमलु वर अच्छइ, बहुगुणभरिउ भविउ जणु पिच्छइ ॥३॥
पिच्छि गुणच्छइ छक्कदलवरकम-सुहगुरु भवियणा

x x x x x x x x x

वरनाण जलपुड इणि सुसंजमि चरणसरकरुसिरे
गर्णुर्णुणुणु भमर मुणिंद रसु सिद्धंतु तहिं सीलस्सरे ॥३॥
छज्जइ कमणुप्पमइ है सुहगर गरुयबुद्धि मज्जाय...यर हर ।
जिणसासणह करइ पब्भावण जिम सुरिंदु सुरगिरिनिच्छलमणु ॥४॥
मणु करिवि निच्चलु भविय सुहगुरु-वयणि भुवण करवियः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जित सत्तुंजओ सुतारणु थंभणउ रच्चाविया ।
धर जाव सुरगिरि भुवण ससाय वहइ गंगतरंग ए
अर्णर्णर्ण मंगलु सूरि जिणेसरसूरि सुहमउप्पम छज्जए ॥४॥
॥ इति श्री जिनेश्वरसूरिकुंडलिया-काव्य; समाप्ता कृतिरियं महं. सज्जन श्रावकस्य ॥

★

महं. सज्जनश्रावक कृत
श्रीजिनप्रबोधसूरि-नाराचबंधछंद

जु वीरनाह पाय पट्टभत्तिचंगजुगवरो
जु नवहभेय बंभचेरगुत्तिगुत्तु गणहरो ।
सुहमसामि जंबुसामि चरणकमल महुयरो
सु सुयणवन्नि जिणपबोहसूरिराउ जुगवरो ॥१॥

जु सतरभेय संजमस्स पालणो पवत्तए
जु दसहभेयज इह धम्म नय विचित्तु पालए ।
पंचसमिति तिन्निगुपति सुद्धसीलसुंदरो
सु सुयणवन्ने(न्नि) जिणपबोहसूरिराउ जगवरो ॥२॥

जु गच्छ पवर मुणिहि माहि लीह पामए
जु गुरुय पंचवयह भारु लीलमत्त धारए ।
सहसअट्ठदसह-सील-अंग जोय धुरंधरो
सु सुयणवन्नि जिणपबोहसूरिराउ जुगवरो ॥३॥

जु पउमसेय लेस सेह अंगसोहए
जु चउकसाय दलिवि दप्पु सुविहि मग्गु जोयए ।
जु जमिय वाणि भविय नाणि बोहए मुणीसरो
सु सुयणवन्नि जिणपबोहसूरिराउ जुगवरो ॥४॥
॥ इति श्रीजिनप्रबोधसूरिनाराचछंद, समाप्ता कृतरियं महं० सज्जनश्रावकस्य ॥

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org